सोम प्रदोष व्रत कथा PDF

पौराणिक कथा के अनुसार एक नगर में एक ब्राह्मण रहता था। उनके पति का निधन हो गया था। अब उसका कोई सहारा नहीं था, इसलिए वह सुबह होते ही अपने बेटे के साथ भीख मांगने निकल जाती थी। वह अपना और अपने बेटे का पेट भरती थी। एक दिन ब्राह्मणी घर लौट रही थी तो उसने देखा कि एक लड़का घायल अवस्था में कराह रहा है।

ब्राह्मण दयावश उसे अपने घर ले आया। वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया, उसके पिता को बन्दी बना लिया और राज्य पर अधिकार कर लिया, अतः वह इधर-उधर घूमता रहा। राजकुमार ब्राह्मण के पुत्र के साथ ब्राह्मण के घर रहने लगा।

एक दिन अंशुमती नाम की गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उसे उससे प्रेम हो गया। अगले दिन अंशुमती अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उसे भी राजकुमार पसंद आ गया। कुछ दिनों बाद, अंशुमती के माता-पिता को भगवान शंकर ने स्वप्न में राजकुमार और अंशुमती का विवाह करने का आदेश दिया। यही किया गया था। ब्राह्मण प्रदोष व्रत करने के साथ-साथ भगवान शंकर की पूजा भी करते थे।

प्रदोष व्रत के प्रभाव से तथा गन्धर्वराज की सेना की सहायता से राजकुमार विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ कर पुनः अपने पिता के साथ सुखपूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण-पुत्र को अपना प्रधान मंत्री बना लिया। मान्यता है कि जिस प्रकार ब्राह्मणों के प्रदोष व्रत के प्रभाव से दिन बदलते हैं ठीक उसी प्रकार

pdfinbox.com

से बिल्कुल भगवान शिव अपने सच्चे भक्तों को निश्चित ही सुख प्रदान करते है ।

pdfinbox.com

pdfinbox.com